

[2014] 1 एस. सी. आर. 567

जोशंदर यादव

बनाम

बिहार राज्य

(2009 की आपराधिक अपील सं. 259)

20 जनवरी, 2014

[रंजना प्रकाश देसाई और जे. चेलमेश्वर, न्यायमूर्तिगण]

भारतीय दंड संहिता, 1860: धारा 302, धारा 149, धारा 498 ए, धारा 201 - दहेज हत्या - आरोप है कि पीड़िता-मृतक को आरोपी ससुराल वालों ने दहेज के लिए परेशान किया और एक दिन उन्होंने उसे जहर दे दिया और उसका शव नदी में फेंक दिया - विचारणों न्यायालयों द्वारा दोषसिद्धि - आरोपी-साले द्वारा इस आधार पर अपील कि वह अपने भाइयों से अलग हो गया था और मृतक के साथ हुए दुर्व्यवहार और हत्या में शामिल नहीं था - निर्णय: मृतक के पिता और भाई, अभियोजन साक्षी-9 और 10 के साक्ष्य, इस बात को प्रभावित नहीं करते कि मृतक के साथ क्रूरता की गई थी और उत्पीड़न किया गया था, पर कोई आंच नहीं आई और इसलिए वह विश्वसनीय था - अन्य संबंधित परिस्थितियाँ जैसे मजबूत मकसद, यह तथ्य कि उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन, आरोपी संख्या 6, मृतक के लापता होने की सूचना देने के लिए अभियोजन साक्षी-9 के घर गए, लेकिन गुमशुदगी की प्रतिवेदन दर्ज नहीं कराई; जब अभियोजन साक्षी-9 और अभियोजन साक्षी-10, अभियुक्त संख्या 6 के साथ अभियुक्त के घर गए, तो अभियुक्त संख्या 6 अचानक उन्हें छोड़कर चला गया और यह तथ्य कि सभी अभियुक्त अपने सामान के साथ अपने घर से फरार हो गए, इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि अभियुक्त ही मृतक की मृत्यु के लिए ज़िम्मेदार थे - अभियुक्त द्वारा यह झूठा स्पष्टीकरण

कि मृतक नहाने गया था और फिसलकर डूब गया, ने अभियोजन पक्ष के मामले को और मजबूत किया - अभियोजन पक्ष ने यह सिद्ध कर दिया है कि अभियुक्तों ने मृतक के साथ दहेज के लिए क्रूरता/उत्पीड़न किया था, इसलिए अभियुक्तों को अभियोजन पक्ष के मामले को गलत साबित करने के लिए उन तथ्यों का खुलासा करना चाहिए था जो उनके व्यक्तिगत और विशेष ज्ञान में थे - वे साक्ष्य अधिनियम की धारा 106 के तहत उन पर आए दायित्व का निर्वहन करने में विफल रहे, इसलिए, अभियुक्तों के विरुद्ध प्रतिकूल निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए - दोषसिद्धि आदेश में हस्तक्षेप नहीं किया गया - साक्ष्य अधिनियम, 1872 - धारा 106

आपराधिक न्याय प्रशासन: वैज्ञानिक परीक्षण - जांच - विषाक्तता के मामले में - निर्णय: जहाँ विषाक्तता का संदेह हो, शवपरीक्षण के तुरंत बाद, अभियोजन एजेंसियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विसरा जाँच के लिए एफएसएल को भेजा जाए और एफएसएल को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विसरा की तुरंत जाँच की जाए और प्रतिवेदन जाँच एजेंसियों/अदालतों को जल्द से जल्द भेजी जाए - यदि विसरा प्रतिवेदन प्राप्त नहीं होती है, तो संबंधित न्यायालय को स्पष्टीकरण मांगना चाहिए और संबंधित एफएसएल अधिकारी को यह स्पष्टीकरण देने के लिए बुलाना चाहिए कि विसरा प्रतिवेदन जाँच एजेंसी/न्यायालय को क्यों नहीं भेजी गई - ये वैज्ञानिक परीक्षण एक आपराधिक मामले के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, खासकर जब गवाहों के बयान से पलटने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही हो - इस मामले में, वे सभी गवाह जिन्होंने पीड़िता को जहर दिए जाने की बात कही थी, अपने बयान से पलट गए - अगर विसरा प्रतिवेदन अभिलेख में होती और जहर देने का मामला सच होता, तो अभियोजन पक्ष और भी मजबूत आधार पर होता - अभियोजन पक्ष को निर्देश दिए गए एजेंसी/न्यायालय.

अभियोजन पक्ष का मामला यह था कि सभी आरोपी मृतका के साथ क्रूरता से

पेश आते थे और उसे और दहेज न लाने के लिए परेशान करते थे। अपीलकर्ता मृतका के पति का भाई था। उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन, आरोपी संख्या 6, मृतका के पिता, अभियोजन साक्षी 9 के घर आया और उसे बताया कि मृतका घर से भाग गई है। अभियोजन साक्षी 9 फिर अपने साले और बेटे, अभियोजन साक्षी 10 के साथ आरोपी के घर गया। आरोपी संख्या 6 कुछ दूर तक उनके साथ रहा और फिर किसी अन्य स्थान पर चला गया। वे आरोपी के घर पहुँचे और घर खाली पाया। सभी आरोपी अपना सामान लेकर घर छोड़ चुके थे। पूछताछ करने पर, पड़ोसियों ने उन्हें बताया कि चूँकि मृतका ने अपनी ज़मीन आरोपी के नाम करने से इनकार कर दिया था, इसलिए उन्होंने उसे ज़हर देकर उसकी हत्या कर दी। अभियोजन साक्षी 9 नदी के किनारे उप-निरीक्षक से मिला, जिसने उसका बयान दर्ज किया। तलाशी ली गई और मृतक का शव नदी तल से बरामद किया गया।

विचारणों न्यायालय ने आरोपी को धारा 302, भारतीय दंड संहिता, धारा 149, धारा 498ए और धारा 201, भारतीय दंड संहिता के तहत दोषी ठहराया।

उच्च न्यायालय ने दोषसिद्धि को बरकरार रखा। यह अपील उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती देते हुए दायर की गई थी।

अपील को खारिज करते हुए, न्यायालय ने निर्णय दिया: 1.1. मृतका के पिता (अभियोजन साक्षी-9) ने अभियुक्तों द्वारा मृतका को दिए गए उत्पीड़न और दुर्व्यवहार का विस्तृत विवरण दिया था। अभियुक्त दहेज में दिए गए एक बैल, एक गाय और एक भैंस से खुश नहीं थे। उन्होंने एक घड़ी और एक साइकिल मांगी थी। वह भी दे दी गई। उन्होंने और मांगे। अभियोजन साक्षी-9 ने मृतका के नाम 2 कट्ठा ज़मीन हस्तांतरित कर दी थी। अभियुक्त इसे बेचना चाहते थे या इसे अपने नाम पर हस्तांतरित करवाना चाहते थे और चूँकि मृतका इसके लिए सहमत नहीं थी, इसलिए उन्होंने उसे प्रताड़ित करना जारी रखा। मृतका के बच्चे को अभियोजन साक्षी-9 के पास भेज दिया गया ताकि वह उसका पालन-

पोषण कर सके, लेकिन मृतका को काम करने के लिए वैवाहिक घर में ही रखा गया था। मृतका के भाई अभियोजन साक्षी-10 ने अपने पिता की बात की पुष्टि की थी। अन्य सभी गवाह, यानी अभियोजन साक्षी-2 से अभियोजन साक्षी-7, अपने बयानों से मुकर गए थे। इस मामले के तथ्यों में, यह वास्तव में अभियुक्तों के अपराध की ओर इशारा करता है। उन्होंने अभियोजन पक्ष के गवाहों को अपने पक्ष में कर लिया।

अभियोजन साक्षी-9 ने अपनी प्रतिपरीक्षण में कहा था, "जब भी मेरी बेटी मेरे घर आती थी, तो वह शिकायत करती थी कि उसे वहाँ प्रताड़ित और प्रताड़ित किया जा रहा है। इस तथ्य का और कौन गवाह हो सकता है?" अभियोजन साक्षी-9 और 10 के साक्ष्य से पता चला कि मृतका के साथ अभियुक्तों द्वारा दहेज के लिए क्रूरता और उत्पीड़न किया गया था। इन गवाहों का साक्ष्य सादा और ईमानदार था और कोई अतिशयोक्ति नहीं थी। प्रतिपरीक्षण में, उनके साक्ष्य पर कोई आंच नहीं आई और इसलिए, उन पर पूरी तरह भरोसा किया जाता है।
[कंडिका 8] [579-जी; 580-ए-ई]

1.2. हालाँकि, अभियोजन साक्षी-10 ने कहा कि अभियुक्त 1-पति शादी के बाद अपने भाइयों से अलग हो गया था, उसने स्पष्ट किया कि सभी भाइयों के घर एक ही आँगन में हैं। अभियोजन साक्षी-9 ने स्पष्ट रूप से अपीलकर्ता का नाम एक ऐसे व्यक्ति के रूप में लिया जिसने मवेशियों की माँग की थी। उसने कहा है कि अभियुक्त उसके द्वारा दिए गए मवेशियों से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने और दहेज की माँग की। वे मृतका को परेशान और मारपीट करते थे। उसने बताया कि जब वह यह सूचना मिलने पर कि वह आरोपी के घर गई है, उसके घर गया, तो उसने घर खाली पाया। सभी अभियुक्त अपना सामान लेकर फरार हो गए थे। इसकी पुष्टि जाँच अधिकारी अभियोजन साक्षी-13 ने की, जिसने बताया कि जब वह मृतका के लापता होने की सूचना मिलने पर अभियुक्त के घर गया, तो उसने घर पूरी तरह से खाली पाया। यहाँ तक कि घरेलू सामान और अनाज भी गायब था। अभियोजन

साक्षी मौजूद नहीं थे। उनके परिवार का कोई सदस्य मौजूद नहीं था। मृतक भी मौजूद नहीं थी। ये परिस्थितियाँ इस दावे को खारिज करती हैं कि अपीलकर्ता ने मृतक के साथ क्रूरता करने में अन्य अभियुक्तों का साथ नहीं दिया। इसलिए, भारतीय दंड संहिता की धारा 498 ए के तहत अपीलकर्ता की दोषसिद्धि और सजा पूरी तरह से उचित है। [कंडिका 9] [580-एफ-एच; 581-ए-सी]

बलराम प्रसाद अग्रवाल बनाम बिहार राज्य एवं अन्य (1997) 9 एससीसी 338 = 1996(9) अनुपूरक एससीआर 752; शंभू नाथ मेहरा बनाम अजमेर राज्य एआईआर 1956 एससी 404 = 1956 एससीआर 199- पर भरोसा किया गया।

2. अभियोजन साक्षी-9 और अभियोजन साक्षी-10 ने कहा था कि मृतक का शव नदी तल से बरामद किया गया था। जांच अधिकारी अभियोजन साक्षी-13 ने कहा था कि अभियोजन साक्षी-9 की प्राथमिकी दर्ज करने के बाद उन्होंने अभियुक्त 1 के घर का निरीक्षण किया था। मृतक का शव आरोपी के घर से 600 गज की दूरी पर पड़ा मिला। वह नदी के दक्षिणी किनारे पर, एक घाट के पास, एक फुट गहरे पानी में पड़ा था। घाट हजारी मंडल के मक्के के खेत के पास स्थित था। उन्होंने उसे बाहर निकाला और एक जाँच प्रतिवेदन तैयार की। उन्होंने आगे बताया कि एक 'V' ने बताया कि 29/1/1989 को आरोपियों की एक बैठक हुई थी। 30/1/1989 को वे किसी अन्य स्थान पर चले गए और शाम को यह पता चला कि उन्होंने मृतक को जहर देकर मार डाला था और उसके शव को घाट पर फेंक दिया था। जाँच अधिकारी ने आगे बताया कि अभियोजन पक्ष के अन्य गवाहों ने भी इस तथ्य की पुष्टि की। हालाँकि, ये सभी व्यक्ति न्यायालय में अपने बयानों से मुकर गए। [कंडिका 10] [581-D-F]

3.1. मृतक के शव का शवपरीक्षण करने वाले डॉक्टर, अभियोजन साक्षी-12 ने कहा था कि मृत्यु का कारण डूबने के कारण श्वासावरोध था। उन्होंने कहा था कि डूबने की स्थिति में, यदि तत्काल मृत्यु हो जाती है, तो, पेट में पानी की मात्रा नगण्य होगी। उन्होंने

आगे कहा कि यदि पीड़िता को सोते समय गर्दन दबाकर पानी में रखा जाए, तो एक फुट गहरे पानी में भी मृत्यु हो सकती है। हालाँकि, विसरा परीक्षण की प्रतिवेदन अभिलेख में नहीं है। अभियोजन साक्षी-12 ने स्वीकार किया है कि उसे विसरा परीक्षण के परिणाम की जानकारी नहीं थी। उन्होंने आगे कहा कि मृतक के शरीर पर कोई चोट नहीं थी। मृतक के पिता और भाई और अन्य परिचारकों के साक्ष्य मजबूत मकसद जैसी परिस्थितियों को दर्शाते हैं; यह तथ्य कि आरोपी ने मृतक के लापता होने की कोई शिकायत दर्ज नहीं कराई थी; आरोपी 6 मृतक के बारे में पूछताछ करने के लिए अभियोजन साक्षी-9 के घर गया और फिर अचानक अभियोजन साक्षी 9 और 10 को छोड़कर चला गया जब वे आरोपी के घर जा रहे थे, सभी आरोपी अपने सामान के साथ अपने घर से फरार हो गए और घर पूरी तरह से खाली था, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि आरोपी मृतक की मौत के लिए जिम्मेदार थे। अभियोजन पक्ष ने यह सिद्ध कर दिया है कि अभियुक्तों ने मृतका के साथ क्रूरता की और उसे दहेज के लिए प्रताड़ित किया, इसलिए अभियुक्तों को उन तथ्यों का खुलासा करना चाहिए था जो उनके व्यक्तिगत और विशेष ज्ञान में थे ताकि अभियोजन पक्ष के इस दावे को गलत साबित किया जा सके कि उन्होंने मृतका की हत्या की थी। साक्ष्य अधिनियम की धारा 106 ऐसी स्थिति को कवर करती है। अभियुक्तों पर जो दायित्व आ गया था, उसका उन्होंने निर्वहन नहीं किया। [कंडिका 11, 12, 14] (581-जी; 582-एफ-एच; 583-ए-सी और ई-एफ]

3.2. इस मामले में, मृतका कथित तौर पर अभियुक्तों की हिरासत में थी। वह उनके घर से गायब हो गई थी। नदी में उसका शव कैसे मिला, यह उनकी विशेष और व्यक्तिगत जानकारी में था। वे अभियोजन पक्ष के इस मामले को गलत साबित करने के लिए तथ्य उजागर कर सकते थे कि उन्होंने मृतका की हत्या की थी। वे साक्ष्य अधिनियम की धारा 106 के तहत उन पर जो दायित्व आया था, उसे पूरा करने में विफल रहे। अभियोजन पक्ष से यह अपेक्षित नहीं है कि वह मृतका की हत्या कैसे की गई। अभियुक्तों के विरुद्ध प्रतिकूल निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए क्योंकि वे यह स्पष्ट करने में विफल रहे कि मृतका

नदी में एक फुट गहरे पानी में कैसे मृत पाई गई। [कंडिका 16] [585-सी-ई]

3.3. प्रासंगिक रूप से, शवपरीक्षण नोट्स में मृत शरीर में भारी मात्रा में पानी की मौजूदगी का संकेत नहीं मिला। अभियोजन साक्षी-12 के अनुसार, डूबने की स्थिति में, यदि तत्काल मृत्यु हो जाती है, तो पेट में पानी की मात्रा नगण्य होगी। अभियोजन साक्षी-12 के साक्ष्य से पता चला कि मृतका की मृत्यु पानी में डूबने के तुरंत बाद हुई क्योंकि उसके पेट में अधिक पानी नहीं था। मृतका गर्भवती थी। उसके गर्भाशय में पूर्ण अवधि का मृत नर शिशु था। इसलिए, वह कोई प्रतिरोध नहीं कर सकती थी। इसलिए, मृत शरीर पर कोई चोट के निशान नहीं थे। ऐसा प्रतीत होता है कि पूरा ऑपरेशन तेजी से और कुशलता से किया गया था। लेकिन किसी भी मामले में, अभियोजन पक्ष को यह स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं है कि अभियुक्त ने मृतका की किस तरह से हत्या की क्योंकि मृतका घटना से पहले अभियुक्त के घर में रह रही थी और वह उस घर से गायब हो गई थी। उसकी अप्राकृतिक मृत्यु के सभी कारण अभियुक्तों के विशेष और व्यक्तिगत ज्ञान में थे, जिसका खुलासा उन्होंने नहीं करना चुना। इसके बजाय, उन्होंने पूरी तरह से झूठा स्पष्टीकरण दिया कि जब मृतका नहाने गई थी, तो वह फिसल गई, पानी में डूब गई और उसकी मृत्यु हो गई। यह कहानी स्पष्ट रूप से झूठी है। अभियुक्त द्वारा दिए गए झूठे स्पष्टीकरण ने अभियोजन पक्ष के मामले को और मजबूत कर दिया क्योंकि यह परिस्थितियों की श्रृंखला में एक अतिरिक्त कड़ी बन गया। यह सच है कि *विट्ठल तुकाराम मोरे मामले में, इस न्यायालय ने यह माना है कि ऐसे मामले में जहाँ पति के परिवार के अन्य सदस्यों पर भारतीय दंड संहिता की धारा 304बी , 302 और 498 ए के तहत अपराधों का आरोप लगाया गया है और मामला परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर आधारित है, परिस्थितिजन्य साक्ष्य आवश्यक मानक के होने चाहिए यदि दोषसिद्धि इसके आधार पर होनी है। इस मामले में अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य आवश्यक मानक के हैं। अभियुक्त के अपराध के अलावा, कोई अन्य अनुमान, अभिलेख पर मौजूद साक्ष्य के आधार पर संभव नहीं है। स्थापित तथ्य केवल उनके अपराध की

परिकल्पना के अनुरूप हैं और उनकी निर्दोषता के साथ असंगत हैं। [कंडिका 17, 18) [585-ई-एच; 586-ए-ई]

**विथल/तुकाराम मोरे एवं अन्य बनाम महाराष्ट्र राज्य (2002) 7 एससीसी 20 2002 एआईआर 2715 - पर भरोसा किया गया।*

4.1. मृतक के पिता, अभियोजन साक्षी-9 ने कहा कि पड़ोसियों ने उन्हें बताया कि मृतक को अभियुक्तों ने जहर दिया था। मृतक के भाई, अभियोजन साक्षी-10 ने भी ऐसा ही कहा है। अभियोजन साक्षी-13, जाँच अधिकारी एक कदम और आगे बढ़ गए। उन्होंने कहा कि अभियोजन पक्ष के पाँच गवाहों ने उन्हें बताया कि अभियुक्तों ने मृतक को जहर देकर मार डाला था; उन्होंने शव को नदी में छिपा दिया था और भाग गए थे। दुर्भाग्य से, ये गवाह अपने बयान से पलट गए। लेकिन तथ्य यह है कि अभियोजन पक्ष ने जहर देने का मामला सामने लाया था। इसलिए, अभियोजन पक्ष के लिए न्यायिक प्रयोगशाला प्रयोगशाला ("एफएसएल") से विसरा की जाँच करवाना आवश्यक था। विचारण न्यायालय ने पाया कि जाँच अधिकारी ने 19/4/1988 को एक याचिका दायर की थी जिसमें डॉक्टर से अनुरोध किया गया था कि वे विसरा को रासायनिक विश्लेषण के लिए एफएसएल, पटना भेजें। शवपरीक्षण नोट्स में उल्लेख है कि विसरा को भविष्य की ज़रूरतों के लिए सुरक्षित रखा गया था। यह बात अभियोजन साक्षी-12 ने भी कही थी। हालाँकि, अभियोजन साक्षी-12 ने यह भी कहा था कि उसे विसरा जाँच के परिणाम की जानकारी नहीं थी। जाँच अधिकारी, अभियोजन साक्षी-13 के साक्ष्य से पता चला कि डॉक्टर ने विसरा एफएसएल को नहीं भेजा था। जब उनसे विसरा प्रतिवेदन के बारे में पूछताछ की गई, तो जाँच अधिकारी ने प्रतिपरीक्षण में कहा कि डॉक्टर को विसरा जाँच के बारे में एक पत्र भेजा गया था। उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने डॉक्टर के खिलाफ वरिष्ठ अधिकारियों से कोई शिकायत नहीं की, बल्कि डायरी के माध्यम से अपने अधिकारी को सूचित किया। डॉक्टर को विसरा एफएसएल को

भेजना चाहिए था जब उनसे ऐसा करने का अनुरोध किया गया था। ऐसा न करने पर, जाँच अधिकारी को अपने वरिष्ठ अधिकारी को सूचित करना चाहिए था और यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाने चाहिए थे कि विसरा केवल डायरी में दर्ज करने के बजाय एफएसएल को भेजा जाए। इस तरह की उदासीनता का आपराधिक न्याय प्रशासन प्रणाली पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है। (कंडिका 19, 20) (586- एफ-एच; 587-ए-डी]

4.2. यह तीसरा मामला था जिस पर इस न्यायालय ने दो महीने की छोटी सी अवधि में ध्यान दिया, जहाँ संदिग्ध ज़हर के एक मामले में, विसरा प्रतिवेदन अभिलेख पर नहीं लाई गई और इस तरह के गंभीर मामलों से निपटने के तरीके पर अत्यधिक नाराजगी व्यक्त की। ये खामियाँ असावधानी का परिणाम हैं या अभियोजन पक्ष को निराश करने के लिए एक सोची-समझी चाल है, यह ज्ञात नहीं है। हालाँकि सभी मामलों में एफएसएल प्रतिवेदन अनिवार्य नहीं है, लेकिन जिन मामलों में ज़हर का संदेह है, वहाँ यह सुनिश्चित करना उचित और न्याय के हित में होगा कि विसरा एफएसएल को भेजा जाए और एफएसएल प्रतिवेदन प्राप्त की जाए। ऐसा इसलिए है क्योंकि सभी मामलों में यह साबित करने के लिए पर्याप्त और मजबूत सबूत अभिलेख पर नहीं हैं कि मृतक को अभियुक्त द्वारा ज़हर दिया गया था। किसी आपराधिक मुकदमे में, जाँच अधिकारी, अभियोजक और न्यायालय बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। न्यायालय का मुख्य कर्तव्य सत्य का पता लगाना है। जाँच अधिकारी, अभियोजक और न्यायालयों को तालमेल से काम करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि दोषियों को पर्याप्त विश्वसनीय कानूनी साक्ष्य प्रस्तुत करके दंडित किया जाए। यदि जाँच अधिकारी चूक जाता है, तो अभियोजक को उसे फटकार लगानी चाहिए और कमियों को दूर करने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए। आपराधिक न्यायालय को सतर्क रहना चाहिए, उसे अपने कार्यों की निगरानी करनी चाहिए और यदि उसे गड़बड़ी का संदेह हो, तो उसे अपनी व्यापक शक्तियों का उपयोग करना चाहिए और किसी भी वास्तविक अभियोजन को विफल करने के किसी भी प्रयास को विफल करना चाहिए। शायद,

अगर विसरा को एफएसएल को भेजा गया होता और एफएसएल प्रतिवेदन अभिलेख में होती, तो यह मामला और भी मजबूत हो जाता। ये वैज्ञानिक परीक्षण किसी भी आपराधिक मामले के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं, खासकर जब गवाहों में मुकरने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही हो। इस मामले में ज़हर दिए जाने की बात कहने वाले सभी गवाह मुकर गए। अगर विसरा प्रतिवेदन अभिलेख में होती और ज़हर दिए जाने का मामला सच होता, तो अभियोजन पक्ष का आधार और भी मजबूत होता। इसलिए, जहाँ ज़हर का संदेह हो, अभियोजन एजेंसियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विसरा वास्तव में जाँच के लिए न्यायिक प्रयोगशाला को भेजा जाए और न्यायिक प्रयोगशाला को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विसरा की तुरंत जाँच की जाए और प्रतिवेदन जाँच एजेंसियों/अदालतों को तुरंत भेजी जाए। यदि विसरा प्रतिवेदन प्राप्त नहीं होती है, तो संबंधित न्यायालय को स्पष्टीकरण मांगना चाहिए और न्यायिक प्रयोगशाला के संबंधित अधिकारी को यह स्पष्टीकरण देने के लिए बुलाना चाहिए कि विसरा प्रतिवेदन जाँच एजेंसी/न्यायालय को क्यों नहीं भेजी गई। आपराधिक न्यायालय को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इसे अभिलेखमें दर्ज किया जाए। [कंडिका 23, 24] [589-O-H; 590-A-E]

भूपेन्द्र बनाम मध्य प्रदेश राज्य 2013 (13) स्केल 52; छोटन साव एवं अन्य.

बनाम बिहार राज्य 2013 (15) स्केल 338 - पर संदर्भित।

नजीर संदर्भ:

1996(9) अनुपूरक एससीआर 752	कंडिका 7, 15	पर आधारित
1956 एससीआर 199	कंडिका 14, 15	पर आधारित
2013 (13) स्केल 52	कंडिका 21, 22	पर आधारित
2013 (15) स्केल 338	कंडिका 22	पर आधारित

2002 एआईआर 2715

कंडिका 6, 18

पर आधारित

आपराधिक अपीलीय क्षेत्राधिकार: आपराधिक अपील संख्या 259/2009

पटना उच्च न्यायालय के दिनांक 24.11.1999 के निर्णय एवं आदेश से आपराधिक अपील संख्या 154/1992 से।

अपीलकर्ता की ओर से गौरव अग्रवाल, शंकर नारायणन।

उत्तरदाता की ओर से गोपाल सिंह, प्रेरणा सिंह।

न्यायालय का निर्णय (श्रीमती) रंजना प्रकाश देसाई, न्यायमूर्ति द्वारा सुनाया गया। अपीलकर्ता जिसे अभियुक्त 2 के रूप में अभियोजित किया गया था, पर पाँच अन्य अभियुक्तों के साथ प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश, मधेपुरा द्वारा भारतीय दंड संहिता की धारा 498 ए और 302 सहित धारा 149 और 201 के तहत दंडनीय अपराधों के लिए मुकदमा चलाया गया। अभियुक्तों के विरुद्ध आरोप, अन्य बातों के अलावा, यह थे कि उन्होंने बिंदुला देवी को और उसके अन्य रिश्तेदारों को संपत्ति की अपनी अवैध मांग पूरी करने के लिए मजबूर करने के उद्देश्य से क्रूरता और उत्पीड़न का शिकार बनाया और अपनी अवैध मांग पूरी न करने पर, अपने साझा उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए, उन्होंने उसकी हत्या कर दी और खुद को कानूनी सजा से बचाने के इरादे से उसके शव को गायब कर दिया।

2. बिंदुला देवी का विवाह अभियुक्त 1 जयप्रकाश यादव से हुआ था। अपीलकर्ता और अभियुक्त 3 शकुन देव यादव, अभियुक्त 1 जयप्रकाश यादव के भाई हैं। अभियुक्त 4 दानी दत्ता यादव उनके पिता हैं और अभियुक्त 5 सत्यभामा देवी उनकी माता हैं। अभियुक्त 6 फुदई यादव, अभियुक्त 1 जयप्रकाश यादव के बहनोई हैं।

3. अभियोजन पक्ष की कहानी, शिकायतकर्ता अभियोजन साक्षी-9 देबू यादव, जो कि बिंदुला देवी के पिता हैं, के साक्ष्य में परिलक्षित होती है। उन्होंने बताया कि उनकी

बेटी बिंदुला देवी का विवाह अभियुक्त 1 जयप्रकाश यादव से हुआ था। उन्होंने आगे बताया कि विवाह में अभियुक्तों को उनकी मांग के अनुसार एक भैंस, एक गाय और एक बैल दहेज के रूप में दिया गया था। हालाँकि, अभियुक्त इससे संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने एक कलाई घड़ी और एक साइकिल की मांग की, जो उन्हें दे दी गई। इसके बाद भी वे बिंदुला देवी को परेशान और प्रताड़ित करते रहे। उन्होंने एक लड़के को जन्म दिया। आरोपी ने बिंदुला देवी को अपने घर में रखा और बच्चे को अपने घर भेज दिया ताकि वह उसका पालन-पोषण कर सके। अभियोजन साक्षी-9 देबू यादव ने आगे बताया कि जब वह आश्विन माह में बिंदुला देवी को अपने घर लाया तो उसने उसे अपने ससुराल में हुए दुर्व्यवहार के बारे में बताया। वह वापस नहीं जाना चाहती थी। उसने उसे समझाने की कोशिश की। उसने दो कट्ठा ज़मीन उसके नाम कर दी। फिर वह अपने ससुराल चली गई। आरोपी ने उस पर ज़मीन बेचने का दबाव बनाया। जब वह ज़मीन बेचने के लिए तैयार नहीं हुई, तो उन्होंने उसे और प्रताड़ित किया। अभियोजन साक्षी-9 देबू यादव ने आगे बताया कि सोमवार को लगभग 4:00 बजे शाम को आरोपी 6 फुदई यादव उसके घर आया और पूछा कि क्या बिंदुला देवी वहाँ आई थी और उसे बताया कि वह घर से भाग गई है। उसने आरोपी 6 फुदई यादव से कहा कि बिंदुला देवी अपने घर से नहीं भागेगी। इसके बाद वह अपने बेटे सचिंद्र यादव और अपने साले के साथ कोल्हुआ गाँव में स्थित आरोपी के घर गए। आरोपी 6 फुदई यादव कुछ दूर तक उनके साथ रहे और फिर किसी और जगह चले गए। वे कोल्हुआ गाँव पहुँचे और पाया कि आरोपी का घर खाली था। सभी आरोपी अपना सामान लेकर घर से जा चुके थे। बिंदुला देवी भी घर पर मौजूद नहीं थीं। पूछताछ करने पर पड़ोसियों ने उन्हें बताया कि चूँकि बिंदुला देवी ने ज़मीन आरोपियों के नाम करने से इनकार कर दिया था, इसलिए उन्होंने उसे ज़हर देकर उसकी हत्या कर दी। नदी किनारे उसकी मुलाकात पुलिस उप-निरीक्षक से हुई, जिन्होंने उसका बयान दर्ज किया। तलाशी ली गई। बिंदुला देवी का शव नदी तल से बरामद किया गया। अभियोजन साक्षी-9 देबू यादव की औपचारिक प्राथमिकी 31/1/1989 को दर्ज की गई और

जाँच शुरू की गई। अपीलकर्ता, अभियुक्त 1 जयप्रकाश यादव और अभियुक्त 3 शकुन देव यादव ने 6/3/1989 को न्यायालय में आत्मसमर्पण कर दिया। अभियुक्त 4 दानी दत्ता यादव ने 26/8/1989 को न्यायालय में आत्मसमर्पण कर दिया।

4. हालाँकि, मुकदमे में अभियोजन पक्ष ने 13 गवाहों से पूछताछ की, लेकिन उसका मामला मृतक के पिता अभियोजन साक्षी-9 देबू यादव और मृतक के भाई अभियोजन साक्षी-10 सचिंद्र यादव के साक्ष्य पर आधारित था। अभियोजन साक्षी-2 से 7 तक अपने बयानों से पलट गए। आरोपियों ने आरोप से इनकार किया। उन्होंने तर्क दिया कि जब बिंदुला देवी नहाने गई, तो वह पानी में फिसल गई, डूब गई और उनकी मृत्यु हो गई।

5. विचारण न्यायालय ने आरोपियों को भारतीय दंड संहिता की धारा 302 सहित धारा 149 के तहत दोषी ठहराया और प्रत्येक को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। उन्हें भारतीय दंड संहिता की धारा 498ए के तहत भी दोषी ठहराया गया और प्रत्येक को तीन-तीन साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। उन्हें भारतीय दंड संहिता की धारा 201 के तहत भी दोषी ठहराया गया और प्रत्येक को सात-सात साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। सभी मुख्य सजाएँ साथ-साथ चलने का आदेश दिया गया। उच्च न्यायालय ने उनकी अपील खारिज कर दी। अतः, यह अपील, विशेष अनुमति द्वारा, अभियुक्त 2 द्वारा की गयी है।

6. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता श्री गौरव अग्रवाल ने दलील दी कि यह मामला परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर आधारित है। अधिवक्ता ने बताया कि अपीलकर्ता, अभियुक्त 1 जयप्रकाश यादव, बिंदुला देवी के पति का भाई है। अभियोजन साक्षी-10 सचिंद्र यादव ने अपनी गवाही में कहा कि अभियुक्त 1 अपने अन्य भाइयों से अलग हो गया था। अभिलेख में ऐसा कोई सबूत नहीं है जिससे यह साबित हो सके कि अपीलकर्ता दहेज की मांग या बिंदुला देवी के साथ किए गए किसी भी दुर्व्यवहार में शामिल था। अधिवक्ता ने दलील दी कि ऐसे

मामलों में जहाँ पति के अलावा उसके परिवार के अन्य सदस्यों पर भारतीय दंड संहिता की धारा 304 बी, 302 और 498 ए के तहत अपराधों का आरोप लगाया जाता है और मामला परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर आधारित होता है, जब तक कि परिस्थितिजन्य साक्ष्य अपेक्षित मानक के न हों, दोषसिद्धि उस पर आधारित नहीं हो सकती। इस संबंध में उन्होंने *विथल तुकाराम मोरे एवं अन्य बनाम महाराष्ट्र राज्य* मामले का हवाला दिया। अधिवक्ता ने दलील दी कि मकसद के बारे में आरोप अस्पष्ट हैं। चिकित्सा साक्ष्य अनिर्णायक हैं। इसलिए, अभियोजन पक्ष अपना मामला साबित करने में विफल रहा है। किसी भी स्थिति में, चूँकि अपीलकर्ता अलग रह रहा था, उसकी संलिप्तता साबित करने वाले किसी भी ठोस सबूत के अभाव में उसे दोषी नहीं ठहराया जा सकता।

7. दूसरी ओर, बिहार राज्य के विद्वान अधिवक्ता श्री गोपाल सिंह ने दलील दी कि अभिलेखों में उपलब्ध साक्ष्य यह स्थापित करते हैं कि सभी आरोपी एक ही प्रांगण में स्थित घरों में रह रहे थे। अधिवक्ता ने दलील दी कि अभियोजन साक्षी-9 देबू यादव और अभियोजन साक्षी-10 सचिंद्र यादव के साक्ष्य अभियोजन पक्ष के मामले को स्थापित करते हैं। प्रासंगिक रूप से, आरोपियों ने पुलिस में कोई शिकायत दर्ज नहीं कराई। यह तथ्य कि वे अपना सारा सामान लेकर घर से चले गए, उनकी मिलीभगत का संकेत देता है। अधिवक्ता ने दलील दी कि बिंदुला देवी आरोपी के घर से गायब हो गई। उनकी संदिग्ध परिस्थितियों में मृत्यु कैसे हुई, यह आरोपी को पता था। यह भार आरोपियों पर डाल दिया गया था, जिसका उन्होंने निर्वहन नहीं किया है। आरोपी के विरुद्ध प्रतिकूल निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए। इस संबंध में, अधिवक्ता ने *बलराम प्रसाद अग्रवाल बनाम बिहार राज्य एवं अन्य*² का हवाला दिया। अधिवक्ता ने दलील दी कि इसलिए अपील खारिज की जाए।

8. हम पहले ही बिंदुला देवी के पिता, अभियोजन साक्षी-9, देबू यादव के

1 (2002) 7 एससीसी 20

2 (1997) 9 एससीसी 338

साक्ष्य का उल्लेख कर चुके हैं। उन्होंने मृतका के साथ अभियुक्तों द्वारा किए गए उत्पीड़न और दुर्व्यवहार का विस्तृत विवरण दिया है। वे दहेज में दिए गए एक बैल, एक गाय और एक भैंस से खुश नहीं थे। उन्होंने एक घड़ी और एक साइकिल मांगी। वह भी दे दी गई। उन्होंने और भी मांगे। अभियोजन साक्षी-9 देबू यादव ने बिंदुला देवी को 2 कट्ठा ज़मीन हस्तांतरित कर दी। अभियुक्तगण इसे बेचना चाहते थे या इसे अपने नाम पर हस्तांतरित करवाना चाहते थे और चूँकि बिंदुला देवी इसके लिए सहमत नहीं थीं, इसलिए उन्होंने उन्हें प्रताड़ित करना जारी रखा। उनके बेटे को उनके पिता के पास भेज दिया गया ताकि वह उनका पालन-पोषण कर सकें, लेकिन उन्हें अपने वैवाहिक घर में काम करने के लिए रखा गया। अभियोजन साक्षी-10 सचिंद्र यादव, बिंदुला देवी के भाई ने अपने पिता की बात की पुष्टि की है। यह दुखद है कि अन्य सभी गवाह, यानी अभियोजन साक्षी-2 से अभियोजन साक्षी-7 तक, अपने बयान से पलट गए। इस मामले के तथ्यों के अनुसार, यह वास्तव में अभियुक्तों के अपराध की ओर इशारा करता है। उन्होंने अभियोजन पक्ष के गवाहों को अपने पक्ष में कर लिया। हम कुछ पीड़ा के साथ अभियोजन साक्षी-9 देबू यादव द्वारा प्रतिपरीक्षण के दौरान कहे गए निम्नलिखित वाक्यों को देख रहे हैं, जो संभवतः क्रूरता के बारे में गवाही देने के लिए कोई स्वतंत्र गवाह न होने के सामान्य प्रश्न का उत्तर हैं। उन्होंने कहा, "जब भी मेरी बेटी मेरे घर आती थी, वह शिकायत करती थी कि उसे वहाँ प्रताड़ित किया जा रहा है और उसके साथ मारपीट की जा रही है। इस तथ्य का और कौन गवाह हो सकता है?" अभियोजन साक्षी-9 और 10 के साक्ष्यों को देखने के बाद, हमें इस बात में कोई संदेह नहीं है कि बिंदुला देवी को अभियुक्तों द्वारा दहेज के लिए क्रूरता और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा था। इन गवाहों के साक्ष्य सीधे और ईमानदार हैं। कोई अतिशयोक्ति नहीं है। प्रतिपरीक्षण में उनके साक्ष्य पर कोई आंच नहीं आई है। उन पर पूर्ण विश्वास किया जा सकता है।

9. यह प्रस्तुत किया गया है कि अपीलकर्ता, अभियुक्त 1 जयप्रकाश यादव से अलग हो गया था और इसलिए, वह अन्य अभियुक्तों की कथित क्रूरता के कृत्यों में पक्षकार

नहीं हो सकता। हमें इस प्रस्तुति में कोई तथ्य नहीं मिला। हालाँकि, अभियोजन साक्षी-10 सचिंद्र यादव ने कहा कि अभियुक्त 1 जयप्रकाश यादव विवाह के बाद अपने भाइयों से अलग हो गया था, उसने स्पष्ट किया है कि सभी भाइयों के घर एक ही आँगन में हैं। अभियोजन साक्षी-9 देबू यादव ने अपीलकर्ता का नाम विशेष रूप से उस व्यक्ति के रूप में लिया है जिसने मवेशियों की माँग की थी। उसने कहा है कि अभियुक्त उसके द्वारा दिए गए मवेशियों से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने और दहेज की माँग की। वे बिंदुला देवी को परेशान और मारपीट करते थे। उसने कहा कि जब वह अभियोजन साक्षी के घर गया, जब उसे सूचना मिली कि वह उनका घर छोड़ चुकी है, तो उसने घर खाली पाया। सभी आरोपी फरार हो गए थे। वे अपना सामान अपने साथ ले गए थे। इसकी पुष्टि जांच अधिकारी अभियोजन साक्षी-13 सुरेंद्र राय ने की है। उन्होंने बताया कि जब वह बिंदुला देवी के लापता होने की सूचना मिलने के बाद आरोपियों के घर गए, तो उन्होंने घर को पूरी तरह से खाली पाया। यहाँ तक कि घर का सामान और अनाज भी गायब था। आरोपी मौजूद नहीं थे। उनके परिवार का कोई सदस्य मौजूद नहीं था। बिंदुला देवी भी मौजूद नहीं थीं। ये परिस्थितियाँ हमें इस तर्क को खारिज करने के लिए प्रेरित करती हैं कि अपीलकर्ता ने बिंदुला देवी के साथ क्रूरता करने में अन्य आरोपियों का साथ नहीं दिया। इसलिए, भारतीय दंड संहिता की धारा 498ए के तहत अपीलकर्ता की दोषसिद्धि और सजा पूरी तरह से उचित है।

10. अब हम बिंदुला देवी की मृत्यु पर आते हैं। अभियोजन साक्षी-9 देबू यादव और अभियोजन साक्षी-10 शिंद्र यादव ने बताया कि बिंदुला देवी का शव नदी तल से बरामद किया गया था। जाँच अधिकारी अभियोजन साक्षी-13 सुरेंद्र राय ने बताया कि अभियोजन साक्षी-9 देबू यादव की प्राथमिकी दर्ज करने के बाद, उन्होंने अभियुक्त 1 जयप्रकाश यादव के घर का निरीक्षण किया। बिंदुला देवी का शव अभियुक्त के घर से 600 गज की दूरी पर, नदी के दक्षिणी किनारे के पास, एक नौका के पास, एक फुट गहरे पानी में पड़ा मिला। नौका हजारी मांडा के मक्के के खेत के पास स्थित थी। उन्होंने उसे बाहर

निकाला और जाँच प्रतिवेदन तैयार की। उन्होंने आगे बताया कि विनोद नामक व्यक्ति ने बताया कि 29/1/1989 को अभियुक्तों की एक बैठक हुई थी। 30/1/1989 को, वे किसी अन्य स्थान के लिए रवाना हो गए और शाम को पता चला कि उन्होंने बिंदुला देवी को जहर देकर मार डाला था और उसका शव घाट पर फेंक दिया था। जाँच अधिकारी ने आगे बताया कि विनोद, परमेश्वरी यादव, बृज बिहारी यादव ने भी इस तथ्य की पुष्टि की। ये सभी व्यक्ति न्यायालय में अपने बयानों से मुकर गए।

11. अभियोजन साक्षी-12 डॉ. अरुण कुमार मंडा ने बिंदुला देवी के शव का शवपरीक्षण किया। उनके अवलोकन निम्नलिखित हैं:

"1. (1) दोनों नथुनों से नकसीर आना।

(2) मुँह से झाग मिला हुआ खून।

(3) दोनों आँखों की पुतलियाँ बंद थीं, कॉर्निया धुंधला था।

(4) चेहरा बंद और नीला पड़ गया था।

(5) दोनों हाथों और पैरों की त्वचा खुरदरी थी।

2. खोपड़ी खोलने पर सभी रक्त वाहिकाएँ मैनिंगेज और मस्तिष्क पदार्थ में अवरुद्ध पाई गईं।

3. छाती में दोनों फेफड़े अवरुद्ध, झागदार और स्पंजी पाए गए और काटने पर रक्त के धब्बे खंडों में पाए गए।

4. हृदय में दोनों कक्ष भरे हुए पाए गए।

5. पेट में लगभग 4 औंस अर्ध-पचा हुआ भोजन रक्त मिश्रित पाया गया।

6. छोटी आंत में-गैस और ठोस मल।

7. बड़ी आंत में-गैस और ठोस मल।
8. गुर्दे के मामले में दोनों अवरुद्ध पाए गए।
9. यकृत और प्लीहा भी अवरुद्ध पाए गए।
10. गर्भाशय में लगभग पूर्ण अवधि का मृत पुरुष शिशु था।

अभियोजन साक्षी-12 डॉ. अरुण कुमार मंडल ने बताया कि मृत्यु का कारण डूबने से श्वासावरोध था। उन्होंने बताया कि डूबने की स्थिति में, यदि तत्काल मृत्यु हो जाती है, तो पेट में पानी की मात्रा नगण्य होगी। उन्होंने आगे बताया कि यदि पीड़ित को सोते समय गर्दन दबाकर पानी में रखा जाए तो एक फुट गहरे पानी में भी मृत्यु हो सकती है। यहाँ यह बताना उचित होगा कि विसरा परीक्षण की प्रतिवेदन अभिलेख में नहीं है। डॉ. मंडल ने स्वीकार किया है कि उन्हें विसरा परीक्षण के परिणाम की जानकारी नहीं थी। उन्होंने आगे बताया कि मृतक के शरीर पर कोई चोट के निशान नहीं थे।

12. हमारी राय में, बिंदुला देवी के पिता और भाई के साक्ष्य और अन्य संबंधित परिस्थितियाँ जैसे मजबूत मकसद; यह तथ्य कि अभियुक्त ने बिंदुला देवी के लापता होने की कोई शिकायत दर्ज नहीं कराई; यह कि अभियुक्त 6 फुदई यादव, बिंदुला देवी के बारे में पूछताछ करने के लिए अभियोजन साक्षी-9 देबू यादव के घर गया था और फिर अभियोजन साक्षी 9 और 10 को अचानक छोड़कर चला गया जब वे अभियुक्त के घर जा रहे थे, यह कि सभी अभियुक्त अपने सामान के साथ अपने घर से फरार हो गए और कि घर पूरी तरह से खाली था, इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अभियुक्त ही बिंदुला देवी की मृत्यु के लिए ज़िम्मेदार थे।

13. यह प्रस्तुत किया गया है कि चूँकि बिंदुला देवी के मृत शरीर पर कोई चोट के निशान नहीं थे, इसलिए यह निष्कर्ष निकालना गलत होगा कि बिंदुला देवी को

डॉक्टर के सुझाव के अनुसार पानी में सुलाकर उनकी गर्दन दबाई गई थी। इसलिए अभियोजन पक्ष की यह दलील कि अभियुक्तों ने उनकी मृत्यु का कारण बनाया, खारिज की जानी चाहिए। यह तर्क दिया गया है कि चिकित्सा साक्ष्य अभियोजन पक्ष के मामले का समर्थन नहीं करते हैं।

14. हमारी राय में, अभियोजन पक्ष ने यह स्थापित कर दिया है कि अभियुक्तों ने मृतका के साथ क्रूरता की और दहेज के लिए उसे प्रताड़ित किया। अभियुक्तों को उन तथ्यों का खुलासा करना चाहिए था जो उनके व्यक्तिगत और विशेष ज्ञान में थे ताकि अभियोजन पक्ष के इस दावे को गलत साबित किया जा सके कि उन्होंने बिंदुला देवी की हत्या की थी। साक्ष्य अधिनियम की धारा 106 ऐसी स्थिति को कवर करती है। जो दायित्व अभियुक्तों पर आ गया था, वह उन्होंने नहीं निभाया। इस संबंध में, हम इस न्यायालय द्वारा *शंभू नाथ मेहरा बनाम अजमेर राज्य*³ में दिए गए निर्णय का संदर्भ ले सकते हैं, जिसमें इस न्यायालय ने स्पष्ट किया था कि साक्ष्य अधिनियम की धारा 101 और धारा 106 कैसे लागू होती हैं। उक्त निर्णय का प्रासंगिक अंश इस प्रकार है:

"(10) धारा 106, धारा 101 का अपवाद है। धारा 101 साक्ष्य के भार के बारे में सामान्य नियम निर्धारित करती है।

'जो कोई यह चाहता है कि कोई न्यायालय उसके द्वारा अभिकथनित तथ्यों के अस्तित्व पर निर्भर किसी विधिक अधिकार या दायित्व के संबंध में निर्णय दे, उसे यह साबित करना होगा कि वे तथ्य विद्यमान हैं।'

दृष्टांत (क) कहता है -

'क, न्यायालय से यह निर्णय देने की इच्छा रखता है

कि ख को उस अपराध के लिए दंडित किया जाएगा जिसके बारे में क का कहना है कि ख ने किया है।

क को यह साबित करना होगा कि ख ने वह अपराध किया है।'

(11) यह सामान्य नियम निर्धारित करता है कि किसी आपराधिक मामले में, साक्ष्य प्रस्तुत करने का भार अभियोजन पक्ष पर होता है और धारा 106 का उद्देश्य निश्चित रूप से उसे इस दायित्व से मुक्त करना नहीं है। इसके विपरीत, यह कुछ असाधारण मामलों से निपटने के लिए बनाया गया है, जिनमें अभियोजन पक्ष के लिए ऐसे तथ्य स्थापित करना असंभव होगा, या किसी भी तरह से अनुपातहीन रूप से कठिन होगा, जो 'विशेष रूप से' अभियुक्त के ज्ञान में हों और जिन्हें वह बिना किसी कठिनाई या असुविधा के साबित कर सके।"

15. बैरम प्रसाद अग्रवाल बनाम बिहार राज्य⁴ में अभियोजन पक्ष ने अभियुक्त के क्रूर आचरण अर्थात् उसके पति और उसके परिवार के सदस्यों और मृतका द्वारा उनके हाथों झेले गए कष्टों को स्थापित किया था। अभियुक्त के असहनीय आचरण के कारण अंततः उसकी अभियुक्त के घर के आँगन में स्थित कुएँ में डूबने से मृत्यु हो गई। इस न्यायालय ने कहा कि उस दुर्भाग्यपूर्ण रात को जो कुछ हुआ और मृतका के कुएँ में गिरने का कारण पूरी तरह से अभियुक्त की व्यक्तिगत और विशेष जानकारी में था। लेकिन वे इस पहलू पर चुप रहे। इस न्यायालय ने कहा कि यह सच है कि मामले को उचित संदेह से परे साबित करने का दायित्व अभियोजन पक्ष पर है। लेकिन एक बार अभियोजन पक्ष ने यह साबित कर दिया कि अभियुक्त लगातार 15 साल के आचरण के दोषी थे। बैरम प्रसाद अग्रवाल बनाम बिहार राज्य, 4 में, अभियोजन पक्ष ने अभियुक्त के क्रूर आचरण को स्थापित कर दिया था अर्थात्

4 (1997) 9 एससीसी 338

उसके पति और उसके परिवार के सदस्यों और मृतका को उनके हाथों जो कष्ट सहने पड़े थे। अभियुक्त के असहनीय आचरण के कारण अंततः उसकी अभियुक्त के घर के आँगन में स्थित कुएँ में डूबकर मृत्यु हो गई। इस न्यायालय ने कहा कि उस दुर्भाग्यपूर्ण रात को जो कुछ हुआ और मृतक के कुएँ में गिरने का कारण पूरी तरह से अभियुक्तों की व्यक्तिगत और विशेष जानकारी में था। लेकिन वे इस पहलू पर चुप रहे। इस न्यायालय ने कहा कि यह सच है कि मामले को उचित संदेह से परे साबित करने का दायित्व अभियोजन पक्ष पर है। लेकिन एक बार जब अभियोजन पक्ष ने यह साबित कर दिया कि अभियुक्त वर्षों से मृतक के साथ लगातार क्रूरता के दोषी थे, जैसा कि मृतक के पिता की अटल गवाही से अच्छी तरह से स्थापित है, तो वे तथ्य जो अभियुक्तों की व्यक्तिगत जानकारी में थे, जो उस दुर्भाग्यपूर्ण रात को घर में मौजूद थे, अभियोजन पक्ष के मामले को गलत साबित करने के लिए उनके द्वारा प्रकट किए जा सकते थे। इस न्यायालय ने कहा कि अभियुक्तों ने साक्ष्य अधिनियम की धारा 106 के तहत उन पर जो दायित्व डाला गया था, उसका निर्वहन नहीं किया। इस निष्कर्ष पर पहुँचते समय, इस न्यायालय ने *शंभू नाथ मेहरा* पर भरोसा किया।

16. वर्तमान मामले में, मृतका कथित तौर पर अभियुक्तों की हिरासत में थी। वह उनके घर से गायब हो गई थी। नदी में उसका शव कैसे मिला, यह उनकी विशेष और व्यक्तिगत जानकारी में था। वे अभियोजन पक्ष के इस मामले को गलत साबित करने के लिए तथ्य उजागर कर सकते थे कि उन्होंने बिंदुला देवी की हत्या की थी। वे साक्ष्य अधिनियम की धारा 106 के तहत उन पर आए दायित्व का निर्वहन करने में विफल रहे। अभियोजन पक्ष से यह अपेक्षित नहीं है कि वह मृतका की हत्या के सटीक तरीके का खुलासा करे। अभियुक्तों के विरुद्ध प्रतिकूल निष्कर्ष निकाला जाना आवश्यक है क्योंकि वे यह स्पष्ट करने में विफल रहे कि मृतका नदी में एक फुट गहरे पानी में कैसे मृत पाई गई।

17. गौरतलब है कि शवपरीक्षण प्रतिवेदन में शव में पानी की भारी मात्रा की

मौजूदगी का संकेत नहीं मिलता। अभियोजन साक्षी-12 डॉ. मंडल के अनुसार, डूबने की स्थिति में, यदि तत्काल मृत्यु हो जाती है, तो पेट में पानी की मात्रा नगण्य होगी। अभियोजन साक्षी-12 डॉ. मंडल के साक्ष्य से, ऐसा प्रतीत होता है कि बिंदुला देवी की मृत्यु पानी में डूबने के तुरंत बाद हुई क्योंकि उनके पेट में पानी की मात्रा कम थी। यह भी ध्यान देने योग्य है कि बिंदुला देवी गर्भवती थीं। उनके गर्भाशय में पूर्ण अवधि का मृत पुरुष शिशु था। इसलिए, वह कोई प्रतिरोध नहीं कर सकती थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि, इसलिए, शव पर कोई चोट के निशान नहीं थे। पूरा ऑपरेशन शीघ्रता और कुशलता से किया गया प्रतीत होता है। लेकिन किसी भी मामले में, जैसा कि ऊपर बताया गया है, अभियोजन पक्ष को यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि बिंदुला देवी की हत्या किस तरह से की गई क्योंकि बिंदुला देवी घटना से पहले आरोपी के घर में रह रही थीं और वह उस घर से गायब हो गईं। उनकी अप्राकृतिक मृत्यु के सभी कारण अभियुक्तों के विशेष और व्यक्तिगत ज्ञान में थे, जिसे उन्होंने उजागर नहीं किया। इसके बजाय, उन्होंने एक पूरी तरह से झूठा स्पष्टीकरण दिया कि जब बिंदुला देवी नहाने गई थीं, तो उनका पैर फिसल गया, वे पानी में डूब गईं और उनकी मृत्यु हो गई। यह कहानी स्पष्ट रूप से झूठी है। अभियुक्त द्वारा दिया गया झूठा स्पष्टीकरण अभियोजन पक्ष के मामले को और मजबूत करता है क्योंकि यह परिस्थितियों की श्रृंखला में एक अतिरिक्त कड़ी बन जाता है।

18. यह सत्य है कि *विठ्ठल तुकाराम मोरे* मामले में इस न्यायालय ने यह माना है कि ऐसे मामले में जहाँ पति के परिवार के अन्य सदस्यों पर भारतीय दंड संहिता की धारा 304 बी, 302 और 498 ए के तहत अपराध का आरोप लगाया गया है और मामला परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर आधारित है, यदि दोषसिद्धि को परिस्थितिजन्य साक्ष्य के आधार पर तय किया जाना है, तो वह साक्ष्य आवश्यक मानक का होना चाहिए। हमारा यह सुविचारित मत है कि इस मामले में अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य आवश्यक मानक के हैं। अभिलेख पर उपलब्ध साक्ष्य के आधार पर अभियुक्त के दोषी होने के अलावा कोई अन्य

अनुमान लगाना संभव नहीं है। स्थापित तथ्य केवल उनके दोषी होने की परिकल्पना के अनुरूप हैं और उनकी निर्दोषता के साथ असंगत हैं। इसलिए, अपील खारिज किए जाने योग्य हैं।

19. विदा लेने से पहले, हमें इस मामले के एक बेहद अहम पहलू पर गौर करना होगा। बिंदुला देवी के पिता, अभियोजन साक्षी-9 देबू यादव ने कहा कि पड़ोसियों ने उन्हें बताया कि बिंदुला देवी को आरोपियों ने जहर दिया था। अभियोजन साक्षी-10 सचिंद्र यादव, बिंदुला देवी के भाई, ने भी यही कहा है। अभियोजन साक्षी-13 सुरेंद्र राय, जाँच अधिकारी, एक कदम और आगे बढ़ गए। उन्होंने कहा कि विनोद यादव, शिव पूजन राम, विनोद कुमार मेहता, परमेश्वर यादव और ब्रज बिहारी यादव ने उन्हें बताया कि आरोपियों ने बिंदुला देवी को जहर देकर मार डाला था; उन्होंने शव को नदी में छिपा दिया था और भाग गए थे। दुर्भाग्य से, ये गवाह अपने बयान से पलट गए। लेकिन तथ्य यह है कि अभियोजन पक्ष ने जहर देने का मामला सामने लाया था। इसलिए, अभियोजन पक्ष के लिए न्यायिक प्रयोगशाला प्रयोगशाला ("एफएसएल") से विसरा की जाँच करवाना ज़रूरी था।

20. विचारण न्यायालय ने पाया है कि जाँच अधिकारी ने 19/4/1988 को एक याचिका दायर की थी जिसमें डॉक्टर से अनुरोध किया गया था कि विसरा को रासायनिक विश्लेषण के लिए एफएसएल, पटना भेजा जाए। शवपरीक्षण नोट्स में उल्लेख है कि विसरा को भविष्य की ज़रूरतों के लिए सुरक्षित रखा गया था। यह बात अभियोजन साक्षी-12 डॉ. मंडल ने भी कही है। हालाँकि, डॉ. मंडल ने यह भी कहा है कि उन्हें विसरा जाँच के परिणाम की जानकारी नहीं थी। जाँच अधिकारी, अभियोजन साक्षी-13 सुरेंद्र राय के साक्ष्य से ऐसा प्रतीत होता है कि डॉक्टर ने विसरा एफएसएल को नहीं भेजा था। जब उनसे विसरा प्रतिवेदन के बारे में पूछताछ की गई, तो जाँच अधिकारी ने प्रतिपरीक्षण में बताया कि डॉक्टर को विसरा जाँच के बारे में एक पत्र भेजा गया था। उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने

डॉक्टर के खिलाफ वरिष्ठ अधिकारियों से कोई शिकायत नहीं की, बल्कि डायरी के माध्यम से अपने अधिकारी को सूचित किया। हमारा मानना है कि डॉक्टर को जब उनसे अनुरोध किया गया था, तो उन्हें विसरा एफएसएल को भेजना चाहिए था। ऐसा न करने पर, जाँच अधिकारी को अपने वरिष्ठ अधिकारी को सूचित करना चाहिए था और केवल डायरी में प्रविष्टि करने के बजाय, विसरा को एफएसएल को भेजने के लिए कदम उठाने चाहिए थे। इस तरह की उदासीनता का आपराधिक न्याय प्रशासन प्रणाली पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है।

21. हम जानते हैं कि कुछ मामलों में जहाँ ज़हर देने का मामला साबित करने के लिए अन्य पुख्ता सबूत अभिलेख पर मौजूद हैं, इस न्यायालय ने विसरा प्रतिवेदन के अभाव में भी अभियुक्त को दोषी ठहराया है। *भूपेंद्र बनाम मध्य प्रदेश राज्य*⁵ में, यह न्यायालय एक ऐसे मामले से संबंधित था जहाँ विसरा प्रतिवेदन अभिलेखपर नहीं थी, लेकिन ज़हर देने के पर्याप्त साक्ष्य मौजूद थे। अभियुक्त पर भारतीय दंड संहिता की धारा 304-8 और 306 के तहत आरोप लगाए गए थे। साक्ष्य अधिनियम, 1872 की धारा 1138 और 113 ए के तहत अनुमानों से समर्थन प्राप्त करते हुए और इस मुद्दे पर प्रासंगिक निर्णयों का हवाला देते हुए, इस न्यायालय ने माना कि मृतक की मृत्यु ज़हर देने के कारण हुई थी। इस न्यायालय की प्रासंगिक टिप्पणी को उद्धृत किया जा सकता है।

"26. इन निर्णयों से स्पष्ट है कि दहेज मृत्यु के प्रत्येक मामले में विसरा की रासायनिक जाँच अनिवार्य नहीं है; यहाँ तक कि जब विसरा प्रतिवेदन मांगी जाती है, तब भी इसकी अनुपस्थिति अभियोजन पक्ष के मामले के लिए घातक नहीं होती है, जब दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 304-बी या दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 306 के तहत अप्राकृतिक मृत्यु दंडनीय होती है; अप्राकृतिक मृत्यु के मामले में, जो दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 304-बी (साक्ष्य अधिनियम, 1872 की धारा 113-बी के तहत उपधारणा के साथ पढ़ें) या धारा 306 (साक्ष्य अधिनियम, 1872 की धारा 113-ए के तहत उपधारणा के साथ पढ़ें) के तहत दंडनीय

हो, जब तक कि ज़हर का सबूत मौजूद हो, ज़हर की पहचान बिल्कुल ज़रूरी नहीं हो सकती है।”

22. छोटन साव एवं अन्य बनाम बिहार राज्य 2013⁶ में यह न्यायालय भारतीय दंड संहिता की धारा 304-बी और 498ए से संबंधित एक मामले पर विचार कर रहा था। आरोप यह था कि मृतक की ज़हर देकर हत्या की गई थी। विसरा प्रतिवेदन अभिलेख में नहीं थी। यह साबित करने के लिए अन्य साक्ष्य भी मौजूद थे कि मृतक को ज़हर दिया गया था। इस न्यायालय ने अपने समक्ष प्रस्तुत मामले को भूपेंद्र के तथ्यों से अलग किया और अभियुक्त को भारतीय दंड संहिता की धारा 304-8 के तहत आरोप से बरी करते हुए निम्नलिखित प्रासंगिक टिप्पणियाँ कीं:

17. अपील समाप्त करने से पहले, हम जाँच की अपर्याप्तता, सरकारी अधिवक्ता और धारा 304-बी के तहत अपराध का संज्ञान लेने वाले मजिस्ट्रेट की ओर से ज़िम्मेदारी का निर्वहन करने में विफलता के बारे में अपनी पीड़ा दर्ज करना चाहते हैं। आरोप पत्र प्रस्तुत करने वाले जाँच अधिकारी को फॉरेंसिक लैब से विसरा प्रतिवेदन प्राप्त किए बिना और उसे न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किए बिना ऐसा नहीं करना चाहिए था। अपराध की प्रकृति को देखते हुए, यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है, खासकर मृतक बबीता देवी द्वारा ज़हर खाने के संबंध में किसी भी प्रत्यक्ष साक्ष्य के अभाव में। इसी प्रकार, सरकारी अधिवक्ता भी इस संबंध में जाँच अधिकारी का मार्गदर्शन करने में अपनी ज़िम्मेदारी निभाने में विफल रहे। उस मजिस्ट्रेट की बात करें जिसने मामले को सत्र न्यायालय को सौंपा था, तो वह अपना विवेक इस्तेमाल करने में विफल रहा और यंत्रवत् मामले को सुनवाई के लिए सौंप दिया। सरकारी अभियोजकों और न्यायिक अधिकारियों पर एक आपराधिक मामले में कानून का पालन सुनिश्चित करने की अधिक ज़िम्मेदारी होती है। उनकी ओर से कोई भी चूक, जैसा कि इस मामले में हुआ, अभियोजन पक्ष के मामले को खतरे में डाल सकती है, जिसके

परिणामस्वरूप बचाव योग्य बरी होना पड़ सकता है। उनकी ओर से अकुशलता और लापरवाही, इस देश में आपराधिक न्याय प्रशासन की प्रणाली में समाज के विश्वास को हिला देगी, जो हमारी राय में, वांछनीय से काफी निचले स्तर पर पहुँच गई है।

23. हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि यह तीसरा मामला है जिस पर इस न्यायालय ने दो महीने की छोटी सी अवधि में ध्यान दिया है, जहाँ संदिग्ध ज़हर के मामले में विसरा प्रतिवेदन अभिलेखमें नहीं लाई गई है। हम इस तरह के गंभीर मामलों से निपटने के तरीके पर अपनी गहरी नाराजगी व्यक्त करते हैं। हमें आश्चर्य है कि क्या ये चूक असावधानी का परिणाम हैं या अभियोजन पक्ष को निराश करने के लिए एक सोची-समझी चाल है। हालाँकि सभी मामलों में एफएसएल प्रतिवेदन अनिवार्य नहीं है, लेकिन जिन मामलों में ज़हर का संदेह है, वहाँ यह उचित और न्याय के हित में होगा कि विसरा एफएसएल को भेजा जाए और एफएसएल प्रतिवेदन प्राप्त की जाए। ऐसा इसलिए है क्योंकि सभी मामलों में यह साबित करने के लिए पर्याप्त और ठोस सबूत अभिलेखपर नहीं होते कि मृतक को अभियुक्त ने ज़हर दिया था। एक आपराधिक मुकदमे में, जाँच अधिकारी, अभियोजक और न्यायालय एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। न्यायालय का मुख्य कर्तव्य सच्चाई का पता लगाना है। जाँच अधिकारी, अभियोजक और न्यायालयों को तालमेल से काम करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि दोषियों को पर्याप्त विश्वसनीय कानूनी सबूत अभिलेखमें लाकर दंडित किया जाए। यदि जाँच अधिकारी चूक जाता है, तो अभियोजक को उसे फटकार लगानी चाहिए और कमियों को दूर करने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए। आपराधिक न्यायालय को 'यदि उसे संदेह हो, तो सतर्क रहना चाहिए, उसके कार्यों की निगरानी करनी चाहिए और, गलत काम होने पर, उसे अपनी व्यापक शक्तियों का उपयोग करना चाहिए और किसी भी वास्तविक अभियोजन को विफल करने के किसी भी प्रयास को विफल करना चाहिए। शायद, अगर विसरा एफएसएल को भेजा गया होता और एफएसएल प्रतिवेदन अभिलेखमें होती, तो यह मामला और मज़बूत होता। ये वैज्ञानिक परीक्षण किसी भी

आपराधिक मामले के लिए बेहद महत्वपूर्ण होते हैं, खासकर जब गवाहों में मुकरने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही हो। इस मामले में, ज़हर दिए जाने की बात कहने वाले सभी गवाह मुकर गए। अगर विसरा प्रतिवेदन अभिलेखमें होती और ज़हर दिए जाने का मामला सच होता, तो अभियोजन पक्ष का आधार और भी मज़बूत होता।

24. यह देखते हुए कि कई मामलों में, जहाँ ज़हर का संदेह है, अभियोजन एजेंसियाँ विसरा प्रतिवेदन प्राप्त करने के लिए कदम नहीं उठा रही हैं, हमें लगता है कि इस संबंध में कुछ निर्देश जारी करना आवश्यक है। हम निर्देश देते हैं कि जिन मामलों में ज़हर का संदेह है, वहाँ शवपरीक्षण के तुरंत बाद विसरा एफएसएल को भेजा जाना चाहिए। अभियोजन एजेंसियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विसरा वास्तव में जाँच के लिए एफएसएल को भेजा जाए और एफएसएल को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विसरा की तुरंत जाँच की जाए और प्रतिवेदन जाँच एजेंसियों/अदालतों को तुरंत भेजी जाए। यदि विसरा प्रतिवेदन प्राप्त नहीं होती है, तो संबंधित न्यायालय को स्पष्टीकरण मांगना चाहिए और संबंधित एफएसएल अधिकारी को यह स्पष्टीकरण देने के लिए बुलाना चाहिए कि विसरा प्रतिवेदन जाँच एजेंसी/न्यायालय को क्यों नहीं भेजी गई। आपराधिक न्यायालय को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इसे अभिलेख में दर्ज किया जाए।

25. हमने मामले के गुण-दोष की जाँच की है और यह माना है कि यह अपील खारिज किए जाने योग्य है। इन परिस्थितियों में, यह अपील खारिज की जाती है।

26. इस आदेश की एक प्रति सभी उच्च न्यायालयों के रजिस्ट्रार जनरलों को इस निर्देश के साथ भेजी जाए कि इसे सभी अधीनस्थ दंड न्यायालयों; अभियोजन निदेशक, गृह मंत्रालय के सचिव, गृह विभाग के सचिव और संबंधित उच्च न्यायालयों के अधिकार क्षेत्र में न्यायिक प्रयोगशाला प्रयोगशाला के निदेशक को प्रसारित किया जाए।

महानिदेशक महोदय

अपील खारिज

खंडन (डिस्क्लेमर)- स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नहीं किया जा सकता । समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।